एम.ए. प्रथम सत्र हिन्दी

कोर्स कोड : MNIN-101 प्रश्न पत्र-1

मध्यकालीन काव्य

पाठ - 1 से 21

संशोधित : डॉ. मंगत राम

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	कबीरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1
2.	कबीरदास : साहित्यिक विशेषताएं	10
3.	कबीर : रहस्यवाद	16
4.	कबीर : भक्ति भावना	22
5.	कबीर की भाषा शैली	28
6.	कबीरदास : व्याख्या भाग	35
7.	सूरदास - व्यक्तित्व एवं कृतित्व	41
8.	सूरदास : काव्यगत विशेषताएं	47
9.	सूरदास : काव्य भाषा	53
10.	सूरदास की भक्ति भावना	59
11.	सूरदास : व्याख्या भाग	11
12.	तुलसीदास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	75
13.	तुलसीदास : दार्शनिकता	81
14.	तुलसीदास : काव्य की विशेषताएं	89
15.	तुलसीदास की भक्ति भावना	95
16.	तुलसीदास की समन्वय भावना	101
17	तुलसीदास : व्याख्या भाग	107
18.	मलिक मुहम्मद जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	112
19.	जायसी के काव्य में वर्ण्य वर्णन	123
20.	जायसी के काव्य में अप्रस्तुत विधान	135
21.	जायसी : व्याख्या भाग	148

पाठ-1

कबीरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 कबीरदास का जीवन एवं साहित्यिक परिचय

स्वयं आकलन के प्रश्न-1

1.4 हिंदी साहित्य में कबीरदास का स्थान

स्वयं आकलन के प्रश्न-2

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 संवर्धित पुस्तकें

1.9 सात्रिक प्रश्न

एम.ए. हिन्दी
प्रथम सत्र

प्रश्न पत्र-2
कोर्स कोड : MNIN-102

हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आदि भक्ति एवं रीतिकाल)

इकाई 1 से 20

संशोधित : डॉ. ऊषा रानी

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

विषय सूची

क्र. सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
01.	इतिहास-दर्शन और साहित्येतिहास	
02.	इतिहास लेखन की परंपरा	
03.	हिन्दी साहित्य : आदिकाल	
04.	आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य	
05.	आदिकालीन प्रवृत्तियाँ, काव्य धाराएं तथा रचनाकार	
06.	भक्ति साहित्य : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
07.	प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान	
08.	सूफी काव्य का विकास व प्रमुख सूफी कवि	
09.	रामकाव्य	
10.	कृष्णकाव्य	
11	रामकृष्ण काव्येतर, काव्य	
12.	भक्तितर काव्य व प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य	
13.	रीतिकाव्य	
14.	रीतिकाव्य परंपरा	
15.	रीतिकालीन साहित्य की विभिन्न धाराएं	
16.	रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं	
17.	रीतिबद्ध काव्यधारा	
18.	रीतिसिद्ध काव्यधारा	
19.	रीतिमुक्त काव्यधारा	
20.	रीतिकाल : रचनाकार तथा गद्य साहित्य	

इकाई-1

इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 इतिहास दर्शन और साहित्येतिहास

1.31 हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा

स्वयं आकलन प्रश्न

1.4 सारांश

1.5 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.7 संदर्भित पुस्तकें

1.8 सात्रिक प्रश्न

एम.ए. हिन्दी
प्रथम सत्र

प्रश्न पत्र-3
कोर्स कोड : MNIN-103

हिन्दी नाटक एवं उपन्यास

पाठ 1 से 22

संशोधित : डॉ. ऊषा रानी

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

विषय सूची

क्र. सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
01.	हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास	3
02	जयशंकर प्रसाद : जीवन एवं सृजित साहित्य	10
03	चन्द्रगुप्त नाटक का सार एवं उद्देश्य	16
04	चन्द्रगुप्त एक विवेचन	27
05	चन्द्रगुप्त नाटक के पात्रों का चरित्र-चित्रण	37
06	चन्द्रगुप्त नाटक का व्याख्या भाग	45
07	धर्मवीर भारती : जीवन एवं सृजित साहित्य	52
08	अंधायुग नाटक का सार एवं उद्देश्य	57
09	अंधायुग नाटक का समीक्षात्मक अध्ययन	66
10	अन्धायुग नाटक के पात्रों का चरित्र-चित्रण	77
11	अंधायुग नाटक का व्याख्या भाग	89
12	हिंदी उपन्यास का उद्भव एवं विकास	97
13.	प्रेमचंद : जीवन एवं सृजित साहित्य	103
14.	गोदान उपन्यास का सार एवं उद्देश्य	111
15	गोदान : समीक्षात्मक अध्ययन	119
16	गोदान उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण	132
17	गोदान उपन्यास का व्याख्या भाग	144
18	फणीश्वरनाथ रेणु : जीवन एवं सृजित साहित्य	153
19	मैला आंचल उपन्यास का सार एवं उद्देश्य	158
20	मैला आंचल : एक अध्ययन	167
21	मैला आंचल उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण	180
22	मैला आंचल उपन्यास का व्याख्या भाग	188

इकाई-1
हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास

1.3.1 भारतेन्दु युगीन हिंदी नाटक

1.3.2 प्रसाद युगीन हिंदी नाटक

1.3.3 प्रसादोत्तर हिंदी नाटक

स्वयं आकलन प्रश्न

1.4 सारांश

1.5 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.7 संदर्भित पुस्तकें

1.8 सात्रिक प्रश्न

एम.ए. प्रथम वर्ष
हिन्दी

कोर्स कोड : MNIN-104

भाषा विज्ञान

पाठ 1 से 16

संशोधित: डॉ. मंगत राम

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा	
2.	भाषा विज्ञान: स्वरूप और प्रकार	
3.	स्वन प्रक्रिया : स्वरूप	
4.	स्वन का वर्गीकरण	
5.	स्वनिम विज्ञान : स्वरूप	
6.	रूप विज्ञान का स्वरूप	
7.	व्याकरण का स्वरूप	
8.	वाक्य का स्वरूप	
9.	अर्थ विज्ञान का स्वरूप	
10.	अर्थ परिवर्तन की दिशाएं	
11.	अर्थ परिवर्तन के कारण	
12.	भाषा विज्ञान की उपयोगिता	
13.	वाक्य विश्लेषण	
14.	अन्य शब्द	
15.	लिंग	
16.	वचन और कारक	

इकाई-1

भाषा

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण

1.3.1 भाषा से तात्पर्य

1.3.2 भाषा का अभिलक्षण

1.3.3 भाषा और वाक्

1.3.4 भाषा और वाक् में अन्तर

स्वयं आकलन के प्रश्न

1.4 सारांश

1.5 कठिन शब्दावली

1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.7 संदर्भित पुस्तकें

1.8 सात्रिक प्रश्न

एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सत्र)

Course Code : MHIN-201
पाठ्यक्रम-5

भक्ति एवं रीति काव्य

पाठ 1 से 21

संशोधित - डॉ. मंगत राम

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

अनुक्रमणिका

पाठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मीरा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	1
2.	मीरा की भक्ति भावना	9
3.	मीरा की विरह वेदना	24
4.	मीरा की काव्य भाषा	34
5.	मीरा : व्याख्या भाग	46
6.	रसखान का जीवन परिचय	60
7.	रसखान का साहित्यिक परिचय	68
8.	रसखान की भक्ति भावना	76
9.	रसखान का काव्य सौष्ठव	85
10.	रसखान : व्याख्या भाग	96
11.	बिहारी के काव्य में अप्रस्तुत योजना	115
12.	बिहारी की बहुज्ञता	124
13.	बिहारी के काव्य में अभिव्यंजना शैली	132
14.	बिहारी के काव्य में वियोग वर्णन	142
15.	रीतिकाल में बिहारी का स्थान	153
16.	बिहारी का प्रकृति चित्रण	160
17.	बिहारी : व्याख्या भाग	172
18.	घनानंद के काव्य में विरह वर्णन	199
19.	घनानंद के काव्य में रूप सौन्दर्य	221
20.	घनानंद का काव्यशिल्प	247
21.	घनानंद : व्याख्या भाग	266

पाठ – 1

मीरा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1 भूमिका

2 उद्‌देश्य

3 मीराबाई का जीवन परिचय

4 मीराबाई का साहित्यिक परिचय

5 मीराबाई की साहित्यिक विशेषताएं

6 मीराबाई का कलापक्ष

7 सारांश

8 कठिन शब्दावली

9 स्वयं आकलन प्रश्न

10 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

11 सन्दर्भित पुस्तक

12 सात्रिक प्रश्न

एम.ए. हिन्दी
द्वितीय सत्र

कोर्स कोड : MNIN-202
प्रश्न पत्र-6

हिन्दी साहित्य का इतिहास
(आधुनिक काल)

इकाई 1 से 23

लेखक: ऊषा रानी

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ समरहिल, शिमला-05

विषयानुक्रम

क्रम	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	आधुनिककालीन पृष्ठभूमि एवं नवजागरण	2
2.	सन् 1857 की राज्यक्रांति और पुनर्जागरण	11
3.	भारतेंदुयुगीन प्रमुख साहित्यकार	18
4.	भारतेंदुयुगीन साहित्यिक विशेषताएं	25
5.	द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार	33
6.	द्विवेदी युग की प्रमुख साहित्यिक विशेषताएं	40
7.	हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास	48
8.	छायावाद युगीन साहित्यकार एवं उनकी रचनाएं	55
9.	छायावादी काव्यधारा और उसके रूप	62
10.	उत्तरछायावादी काव्य	70
11.	उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियां	75
12.	प्रगतिवाद के प्रमुख कवि	82
13.	प्रयोगवादी काव्य और उसकी विशेषताएं	87
14.	प्रयोगवाद के प्रमुख कवि	92
15.	नई कविता और उसकी विशेषताएं	96
16.	नवगीत और उसकी विशेषताएं	100
17.	हिन्दी उपन्यास का उद्भव एवं विकास	104
18.	हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास	108
19.	हिन्दी नाटक का उद्भव एवं विकास	112
20.	हिन्दी निबंध का उद्भव एवं विकास	116
21.	हिन्दी संस्मरण और रेखाचित्र का उद्भव एवं विकास	120
22.	हिन्दी जीवनी, आत्मकथा और रिपोर्ताज	124
23.	हिन्दी आलोचना का उद्भव एवं विकास	129

इकाई – 1

आधुनिककालीन पृष्ठभूमि एवं नवजागरण

संरचना

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 आधुनिककालीन पृष्ठभूमि एवं नवजागरण

- आधुनिकता
- आधुनिकता का आरंभ
- हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का आरम्भ

स्वयं आकलन प्रश्न – 1

1.4 आधुनिककालीन परिस्थितियाँ और नवजागरण

- राजनीतिक परिस्थितियाँ
- सामाजिक परिस्थितियाँ
- धार्मिक परिस्थितियाँ
- आर्थिक परिस्थितियाँ
- सांस्कृतिक परिस्थितियाँ
- साहित्य पर प्रभाव
- नवजागरणकालीन साहित्य की विशेषताएँ

स्वयं आकलन प्रश्न – 2

1.5 सारांश

1.6 कठिन शब्दावली

1.7 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.8 संदर्भित पुस्तकें

1.9 सात्रिक प्रश्न

1.1 भूमिका

पिछली कक्षाओं में हम हिन्दी साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत आदिकाल भक्तिकाल और रीतिकाल की पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियों के बारे में विस्तारपूर्वक पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत इकाई में हम आधुनिककालीन पृष्ठभूमि एव नवजागरण, हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का आरंभ और आधुनिक कालीन परिस्थितियां और नवजागरण का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इकाई एक का अध्ययन करने के पश्चात हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. आधुनिककाल की पृष्ठभूमि क्या है?
2. नवजागरण क्या है?
3. आधुनिकता का आरम्भ कब से माना जाता है?
4. हिन्दी साहित्य में आधुनिकता का आरंभ कब हुआ?
5. आधुनिककालीन परिस्थितियाँ क्या हैं?

एम.ए. हिन्दी
द्वितीय वर्ष

कोर्स कोड : MNIN-203
प्रश्न पत्र-7

आधुनिक गद्य साहित्य

इकाई 1 से 20

लेखक: ऊषा रानी

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ समरहिल, शिमला-05

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
इकाई–1	हिंदी निबंध का आरंभ और विकास	3
इकाई–2	बालकृष्ण भट्ट जीवन और साहित्य	12
इकाई–3	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जीवन और साहित्य	22
इकाई–4	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जीवन और साहित्य	35
इकाई–5	प्रतापनारायण मिश्र जीवन और साहित्य	48
इकाई–6	रामविलास शर्मा जीवन और साहित्य	60
इकाई–7	विद्यानिवास मिश्र जीवन और साहित्य	69
इकाई–8	कुबेरनाथ राय जीवन और साहित्य	79
इकाई–9	सरदार पूर्ण सिंह जीवन और साहित्य	93
इकाई–10	व्याख्या भाग	108
इकाई–11	हिन्दी कहानी का भौगोलिक विस्तार	127
इकाई–12	पं० माधव राव स्प्रे जीवन और साहित्य	134
इकाई–13	प्रेमचंद : जीवन और साहित्य	142
इकाई–14	जैनेन्द्र : जीवन और साहित्य	153
इकाई–15	निर्मल वर्मा : जीवन और साहित्य	162
इकाई–16	मन्नू भंडारी : जीवन और साहित्य	172
इकाई–18	शेखर जोशी : जीवन और साहित्य	187
इकाई–19	एस०आर० हरनोट जीवन और साहित्य	196
इकाई–20	व्याख्या भाग	204

इकाई–1
हिंदी निबंध का आरंभ और विकास

संरचना

1.1 भूमिका
1.2 उद्देश्य
1.3 हिन्दी निबंध का आरम्भ और विकास
1.3.1 भारतेन्दु युग
1.3.2 द्विवेदी युग
1.3.3 शुक्ल युग
1.3.4 शुक्लोत्तर युग
स्वयं आकलन प्रश्न
1.4 सारांश
1.5 कठिन शब्दावली
1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
1.7 संदर्भित पुस्तकें
1.8 सात्रिक प्रश्न

1.1 भूमिका

स्नातक स्तरीय कक्षाओं में हमने हिन्दी गद्य साहित्य के अन्तर्गत कुछ निबंधकारों व उनके निबंधों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त की। स्नातकोत्तर कक्षाओं में हम विविध निबंधों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। इकाई एक में हम हिन्दी निबंध के आरंभ और विकास का अध्ययन करेंगे। इसके अन्तर्गत हम भारतेन्द युग, द्विवेदी युग, शुक्ल युग और शुक्लोत्तर का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इकाई एक का अध्ययन करने के पंश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि –

1. हिन्दी निबंध का आरंभ कब से हुआ?
2. हिन्दी निबंध का विकास कितने चरणों में हुआ?
3. भारतेन्दु युग के प्रमुख निबंधकार कौन–कौन से है?
4. द्विवेदी युगीन निबंधों की प्रमुख विशेषताएं क्या है?
5. शुक्ल की निबंध, कला की विशेषता क्या है ?

1.3 हिन्दी निबन्ध का आरम्भ और विकास :

प्रिय विद्यार्थियों! हिन्दी निबन्ध के विकास – इतिहास को जानने के लिए हमें संक्षेप में हिन्दी गद्य इतिहास को देखना जरूरी होगा। साहित्येतिहासकारों के मतानुसार –हिन्दी भाषा तथा साहित्य का इतिहास पिछले एक हजार वर्ष का इतिहास है जिसमें शौरसेनी, ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी, प्राचीन हिन्दी आदि का पद्यमय साहित्य बहत बड़ी मात्रा में मिलता है परन्तु साहित्य के कुछ फुटकर उदाहरण चुनकर गद्य के उद्‌भव के बारे में इसका उदयकाल चौदहवीं शताब्दी से ही ठहरता है। मुख्यतः इस काल में साहित्य की मौखिक परम्परा रही और

एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सत्र)

Course Code : MHIN-204
पाठ्यक्रम-8

हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि

पाठ 1 से 20

संशोधित - डॉ. मंगत राम

अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं मुक्त-अध्ययन केन्द्र
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ
समरहिल शिमला -171005

हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि

पाठ्यक्रम 8

अनुक्रमणिका

पाठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	विश्व के भाषा परिवार	1
2.	भारतीय आर्य भाषा	11
3.	मध्यकालीन आर्यभाषा	19
4.	हिंदी और अन्य भाषा	29
5.	हिंदी क्षेत्र और उसकी बोलियां	42
6.	अवधी भाषा	59
7.	ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास	72
8.	खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास	85
9.	भाषा का स्वरूप	97
10.	स्वन प्रक्रिया	105
11.	स्वनिम स्वरूप	122
12.	शब्द रचना	134
13.	उपसर्ग	162
14.	प्रत्यय	175
15.	लिंग	201
16.	वचन	221
17.	संज्ञा और सर्वना	236
18.	विशेषण	254
19.	क्रिया, काल और समास	266
20.	देवनागरी लिपि	284

पाठ – 1

विश्व के भाषा परिवार

1.1 भूमिका

1.2 उद्देश्य

1.3 विश्व के भाषा परिवार

1.4 भारोपीय परिवार

1.5 सारांश

1.6 शब्दार्थ

1.7 स्वयं आकलन के प्रश्न

1.8 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर

1.9 सात्रिक प्रश्न

1.10 संदर्भित पुस्तकें

एम.ए. हिन्दी
द्वितीय वर्ष

कोर्स कोड : MNIN-205
प्रश्न पत्र-9

मीडिया लेखन एवं हिन्दी पत्रकारिता

(जेनरिक-1)

इकाई 1 से 22

लेखक: डॉ. ऊषा रानी

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, ज्ञान पथ समरहिल, शिमला-05

अनुक्रमणिका

क्रम	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप	3
2.	मीडिया का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप	8
3.	हिन्दी पत्रकारिता के प्रकार	17
4.	मीडिया के प्रकार	26
5.	मीडिया एवं जनसंचार : हिन्दी भाषा के संदर्भ में	34
6.	संचार के प्रकार	37
7.	जनसंचार का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप	42
8.	जनसंचार के माध्यम	46
9.	जनसंचार की आवश्यकता, महत्त्व एवं उपयोगिता	51
10.	जनसंचार की विशेषताएं	56
11.	जनसंचार के विभिन्न माध्यम	61
12.	हिन्दी पत्रकारिता एवं मीडियाः चुनौतियां और दायित्व	65
13.	हिन्दी पत्रकारिता एवं मीडिया : अंतर्संबंध एवं प्रभाव	73
14.	समाज पर मीडिया का प्रभाव	78
15.	सोशल मीडियाः अवधारणा एवं स्वरूप	84
16.	सोशल मीडिया का महत्व एवं उपयोगिता	90
17.	सोशल मीडिया का समाज पर प्रभाव	95
18.	प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक एवं मल्टीमीडिया में हिन्दी की भूमिका	102
19.	रेडियो एवं विज्ञापन लेखन	107
20..	टेलीविजन लेखन : स्वरूप एवं प्रकृति	112
21.	समाचार एवं पुस्तक लेखन	117
22.	हिन्दी मीडिया की तकनीकी शब्दावली	127

इकाई – 1

पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

संरचना

1.1 भूमिका
1.2 उद्देश्य
1.3 हिन्दी पत्रकारिता
1.3.1 पत्रकारिता का अर्थ
1.3.2 पत्रकारिता की परिभाषा
1.3.3 पत्रकारिता का स्वरूप
1.3.4 उद्भव एवं विकास
स्वयं आकलन प्रश्न
1.4 सारांश
1.5 कठिन शब्दावली
1.6 स्वयं आकलन प्रश्नों के उत्तर
1.7 संदर्भित पुस्तकें
1.8 सात्रिक प्रश्न

1.1 भूमिका

स्नातकोत्तर कक्षाओं में हम हिन्दी पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। हिन्दी पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन के अन्तर्गत इकाई एक में हम पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप तथा उद्भव एवं विकास का गहन अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इकाई एक का अध्ययन करने के पश्चात् हम यह जानने में सक्षम होंगे कि -

1. पत्रकारिता का अर्थ क्या है?
2. पत्रकारिता की परिभाषा क्या है?
3. पत्रकारिता का स्वरूप क्या है?
4. पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास कैसे हुआ?

1.3 हिंदी पत्रकारिता

भारत में पत्रकारिता का उदय बहुत सामान्य रूप में हुआ। नारद मुनि को पत्रकारों का पूर्वज माना जाता है। महर्षि नारद अपने समय में विश्व के सभी स्थानों का भ्रमण करके समाचार संचय और प्रचार-प्रसार का कार्य करते थे, जिससे संबंधित व्यक्ति तद्नुसार अपना कार्य सम्पादक कर सके। नारद के कार्य में जनहित की भावना ही रहती थी। वास्तविक पत्रकारिता में उस बात को अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए, जिसे जनता सोचती है। इसी कारण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जनता का मूल अधिकार माना गया है। प्रेस वास्तव में ही जन-विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है। इसी संदर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था, ''समाचार-पत्र का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं-विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जाग्रत करना और तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।''